परिशिष्ट

॥ टिप्पणियाँ ॥

सन्त कबीर

➥ साखी

1. द्योहाड़ी कै बार—प्रतिदिन कितने ही बार—बेला (आपकी बलिहारी है)। **बार** = देरी। **तैं** = से। **मानिष** = मनुष्य।

3. दीपक दीया.....हट्ट—रूपक। **विसाहुणाँ** = क्रय-विक्रय; जन्म मरण से हमेशा के लिए छूटने की व्यंजना।

4. भेरा = बेड़ा (नाव)। **लहरि** = कृपारूपी तरंग।

7. जाके संग.....लागि—अज्ञान के कारण जीव ब्रह्म से बिछुड़ गया है, ज्ञान प्राप्त करके उसी के साथ पुनः लगने की प्रेरणा है।

13. सुन्नि सिषर = शून्य शिखर, सुषुम्ना नाड़ी का ऊपरी भाग।

14. पाणी ही तै.....कहा न जाइ—जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय में केवल उपाधि मात्र का अन्तर होता है, कोई सच्चा परिवर्तन नहीं होता। मुक्ति में भी कोई नयी उपलब्धि नहीं है, यथास्थिति है।

15. पंखि = कुण्डलिनी अथवा जीवात्मा का प्रतीक। **पंखि उड़ाणीं.....यहु देस**—कुण्डलिनी शून्य शिखर पर पहुँच गयी। वहाँ पर जीव ने अमृत सरोवर का जल पिया। उस दशा में जीव का देहाध्यास नहीं रहा। साधना के द्वारा ब्रह्मानन्द प्राप्ति का सन्देश है।

18. पाका कलस = ज्ञानी के शरीर का प्रतीक। **थाकि** = प्यास, तृष्णा।

19. बूँद समानी समद मैं = जीव का ब्रह्म में लय। **कत** = कैसे।

➥ पदावली

1. दुलहनी गावहु मंगलचार—कबीर ने पति-पत्नी के प्रतीक द्वारा परमात्मा-जीवात्मा के सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है।

2. बहुत दिनन थैं.....राम मोहि दीन्हाँ—प्रेमी रूप में भगवान् के अनुग्रह की व्यंजना।

3. संतौ भाई आई ग्यान की आँधी.....अज्ञान-नाश का रूपक के माध्यम से वर्णन।

4. पंडित बाद बदंते झूठा.....ज्ञान के शब्दों के व्यवहार मात्र से नहीं, अपितु तत्त्व-साक्षात्कार से काम चलता है।

5. हम न मरै.....जीव शाश्वत है और जगत् नश्वर, अज्ञानी मरता है अर्थात् उसे ही मरने की प्रतीति होती है, ज्ञानी को नहीं।

6. काहे री नलनी.....जीवात्मा का ताप और दुःख से तीनों कालों में कोई सम्बन्ध नहीं है। उसको दुःख और ताप की अनुभूति केवल भ्रमजनित है।

मलिक मुहम्मद जायसी

➥ नागमती-वियोग-वर्णन

बावनकरा = वामनावतार। **छरा** = छल। **अपसबा** = चल दिया। **अलोपी** = गायब हो गया। **अकरूर** = अक्रूर। **पींजर** = अस्थिपंजर। **बाउर** = बावला। **जीऊ** = हृदय। **दाधै** = दग्ध करता है। **रामा** = रमणी। **हरे-हरे** = धीरे-धीरे। **नारी** = नाड़ियाँ। **खनहिं** = क्षण में। **चोला** = वस्त्र। **भाखा** = भाषा। **हँस** = चेतना, प्राण। **पाटमहादेइ** = महारानी। **मेरावा** = मेल। **सँवरि** = स्मरण करके। **मेहा** = बादल। **बेली** = बेल। **बारी** = बाला। **तरिबर** = शरीर। **विधंसा** = नष्ट हुआ। **मृगसिरा** = एक नक्षत्र जो ग्रीष्म ऋतु में उदित होता है। **पलुहंत** = पल्लवित। **घन बाजा** = बादलों का गरजना। **दुंद-दल** = युद्ध सेना। **बाजा** = नगाड़ा। **धौरे** = सफेद। **धाए** = दौड़ पड़े हैं। **सेतधजा** = श्वेतध्वजा। **बगपाँति** = बगुलों की पंक्ति। **बीजु** = बिजली। **उबारू** = बचाओ। **गारौ** = गौरव। **भरन परी** = मूसलधार वर्षा होने लगी। **झुरानी** = सूख गयीं। **पुनरबसु** = पुनर्वसु नामक नक्षत्र। **सरेखा** = चतुर। **भुँइ** = पृथ्वी। **खेवट** = मल्लाह। **वन ढाँक** = ढाँक के वन। **दूभर** = कठिन। **रैनि** = रात्रि। **हिय** = हृदय। **कुवार** = क्वार का महीना। **लटा** = दुर्बल हो गया। **पलुहै** = पल्लवित होगी। **उआ** = उगा। **तुरय** = घोड़ा। **पलनि** = दौड़े। **काँस** = एक प्रकार की घास। **हस्ति** = हाथी। **घाय** = घाव। **बाजहु** = आक्रमण। **गाजहुँ** = गर्जन। **करा** = कला। **अगि दाहू** = अग्निदाह। **परबदेवारी** = दीवाली का पर्व। **सवति** = सौत। **छार** = धूलि। **गाढ़ी** = गहन। **नाहू** = नाथ। **बहुरा** = लौटा। **दगधै** = जलता है। **सोधनि** = वह स्त्री। **सुरुजु** = सूर्य। **चाँपा** = जा छिपा। **बाढ़** = वृद्धि। **दारुन** = भयंकर। **नियरे** = समीप। **सौंर** = रजाई। **जूड़ी** = कंपन। **हिवंचल** = हिमाचल। **परवी** = पक्षी। **सचान** = बाज। **ओनंत** = झुकी। **चाँचरि** = होली का उल्लासपूर्ण नृत्य। **निहोर** = विनती। **छार** = राख। **मकु** = सम्भवतः। **चोआ** = चोबा नामक सुगन्धित पदार्थ। **बजागि** = वज्राग्नि। **बारू** = बालू। **दवँगरा** = वैशाख की वर्षा का प्रथम जल। **मेखहु** = मिला दो। **बिगसा** = खिला। **पलुहै** = पल्लवित हो उठेगी। **छाजनि** = छप्पर। **तिनउर** = तिनका। **गाढ़ी** = कठिन। **झूरौं** = सूख रही हूँ। **आगरि** = आग। **बंध** = बन्धु, बाँधने की रस्सी। **साँठि** = पूँजी। **नाठि** = नष्ट हो गयी। **छूँछा** = खाली। **टेक बिहूनी** = बिना टेक के। **धाँभ** = खम्भा।

सूरदास

1. पारधि = बहेलिया। **सचान** = बाज पक्षी। डाल पर बैठे पक्षी की, जिसके ऊपर-नीचे दोनों ओर काल मुँह बाये खड़ा है, क्षण भर में स्मरण करते ही प्रभु ने रक्षा कर ली और उसके दोनों शत्रु पल भर में नष्ट हो गये।

2. अंबुज = कमल। **दुरमति** = दुर्बुद्धि। **अनत** = अन्यत्र।

3. बदन = मुख। **बिधु** = चन्द्रमा। **मेचक** = श्याम रंग। **फरनि** = फलों से। बाल कृष्ण के कायिक सौन्दर्य पर सूर की उक्ति है। समस्त उपमान कृष्ण के अंग-प्रत्यंग, उपमेयों से छवि में परास्त होकर जिसे जहाँ स्थान मिला, वहाँ भागे। भुजंग भुजाओं से हार कर विवरों (बिलों) में, कमल नेत्रों से हार कर पानी में, चन्द्रमा मुख से हार कर आकाश में जाकर रहने लगे और अन्य उपमान तो डर कर छिप गये।

4. हंससुता = सूर्य की पुत्री यमुना जी। **कगरी** = कगारों के बीच की हरी-भरी घाटियाँ। **सुरभी** = गाय। **खरिक** = गौओं के रहने के बाड़े। **मुक्ताहल** = मोती।

5. घनसार = कपूर। **सजीवन** = शीतल व सुगन्धित लेप। **दधिसुत** = चन्द्रमा। **छुंजै** = क्षीण होना, प्रतीक्षा में मार्ग देखते-देखते आँखों की ज्योति क्षीण हो गयी है।

6. जकरी = बकती है। **चकरी** = बच्चों के खेल की चकई जो घूमती रहती है। हारिल या हाड़िल एक पक्षी है जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह पृथ्वी पर कभी बैठता ही नहीं। 'हारिल त्यागि दई धरती पुनि पगु न धर्‌यो धरनी के माँही।' वह सदा वृक्ष पर ही रहता है और जीवन भर लकड़ी का साथ क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ता। पानी पीने के लिए वृक्ष से चोंच द्वारा तोड़कर लायी हुई किसी सूखी लकड़ी पर बैठ कर तृषा शान्त करता है।

गोपियाँ कहती हैं, हे उद्धव कृष्ण हम हारिल की लकड़ी के समान कभी न त्याग किये जाने योग्य हैं। एतदर्थ उनके त्याग और ब्रह्म के ग्रहण का तुम्हारा उपदेश निरर्थक है।

7. मधुकर = भौंरा, उद्धवजी से आशय है।

8. यह कूट पद का उदाहरण है। **मंदिर अरध** = आधा घर, पाख और पक्ष भी पन्द्रह दिन का पखवारा कहलाता है। **हरि अहार** = सिंह का भोजन मांस तथा मास, तीस दिन का महीना भी। **मघ पंचक** = मघा नक्षत्र से पाँचवाँ नक्षत्र। **चित्रा** = चित्त या मन। नक्षत्र 27, वेद 4 और ग्रह 9, सब जोड़ने पर 40 हुए, उसका आधा करने पर **बीस** = बिस या विष।

9. परेखौ = दुश्चिन्तायुक्त विस्मय।

10. कुलाल = कुम्भकार, कुम्हार।

11. रूप रस राँची = रूप का रस पीते रहने की अभ्यस्त। **झूखीं** = दुखी हुईं। **बारक** = एक बार। **पतूखी** = पत्तों से बनी दोनियाँ (जिनमें कृष्ण गाय दुह कर वन में दूध पी लिया करते थे।)

गोस्वामी तुलसीदास

➥ भरत-महिमा (रामचरितमानस)

जुबती = युवती। **परिनामा** = परिणाम। **अचिरिजु** = आश्चर्य। **कलपतरु** = कल्पतरु। **बासर** = दिन। **सगुण** = शगुन। **प्रातही** = प्रातः ही। **उछाहू** = प्रसन्नतापूर्वक। **सनेह** = स्नेह। **सिथिल** = शिथिल। **बिह्वल** = बेचैन। **सिरोमणि** = शिरोमणि। **पय** = दूध। **तीरा** = किनारा। **दोउ बीर** = दोनों भाई। **सेषु** = शेष। **दिनकर** = सूर्य। **ढरकें** = ढलना। **अवसेषा** = अवशेष। **लोचन** = नेत्र। **मलिन** = मुरझाया। **तिमिरु** = अंधकार। **तड़ागा** = तालाब। **पयोधि** = सागर। **विवुध** = देवता। **मंदाकिनी** = नदी। **नियोगा** = आज्ञा। **कोटि** = करोड़। **अनत** = दूसरी जगह।

अघ = पाप। **अवगुन** = अवगुण। **मीना** = मछली। **गुनत** = सोचते हुए। **कृत खोरी** = की हुई गलती। **उताइल पाऊ** = पैर जल्दी-जल्दी पड़ने लगते हैं। **भूरि भाँय** = अत्यन्त प्रेमपूर्वक। **उर** = हृदय। **दुहुँ** = दोनों। **आसिष** = आशीष। **अनुराग** = प्रेम। **देह** = शरीर। **लखि** = देखना। **बिकल** = विकल, व्याकुल।

➥ लंकादहन (कवितावली)

बालधी = पूँछ। **ज्वाल-जाल** = आग का समूह। **कैधौं** = अथवा। **ब्योम-बीथिका** = आकाशरूपी गली में। **सुरेश चाप** = इन्द्र-धनुष। **दामिनी कलाप** = बिजलियों का समूह। **कृसानु-सरि** = अग्नि की सरिता। **जातुधान** = राक्षस। **खोरि-खोरि** = गली-गली से। **चख** = आँख। **अगार** = घर।

➥ गीतावली

1. **मातु मते महँ** = माता के मत में सहमत होऊँ। **सुचि सपथनि** = आज शपथ खाने से मैं कैसे निर्दोष हो सकता हूँ। **खल बच बिसिखन बाँची** = दुष्टों के वाग्वाणों से विद्ध हुए बिना बची है। **रसना** = जीभ। 2. **साखामृग** = वानर। **हौं पुनि अनुज संघाती** = और मैं भैया लक्ष्मण का साथ पकड़ूँगा। 3. **कीरै** = तोता। **पाठ अरथ चरचा कीरै** = जैसे तोते से कोई पाठ के अर्थ की चर्चा करे। **छति लाहु** = हानि-लाभ। **खीरै नीरै** = दूध और पानी।

➥ दोहावली

1. **पसारहि** = फैलाते हैं। **मीत** = मित्र। **परमारथ** = जीव के परम लक्ष्य मोक्ष के लिए।
2. **फबैं** = शोभा देते हैं।
3. **जाचत** = याचना करता है। **माँगनेहि** = याचक, भिखारी।
4. **मराली** = हंस जैसी। **छीर-नीर** = दूध-पानी। **बिबरन** = विवेचन। **बक** = बगुला। **उघरत** = भेद खुल जाता है।
6. **भेषज** = ओषधि।
8. **करषत** = कर्षण, खींचना।
9. **बेगिही** = शीघ्र ही।
10. **दादुर** = मेंढक।

➥ विनयपत्रिका

1. **काहूसौं कछु न चहौंगो** = किसी से चाहे जो हो, मनुष्य या देवता या इतर योनि, कुछ भी नहीं चाहूँगा। **मन क्रम बचन नेम निबहौंगो** = मन, वचन और कर्म से यम-नियमों का पालन करूँगा। (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान–ये दस, यम नियम हैं।) **परुष** = कठोर। **तेहि पावक न दहौंगो** = उससे उत्पन्न हुई क्रोध की आग में नहीं जलूँगा। **परिहरि** = छोड़कर। **अविचल** = अडिग, अचंचल।

2. **चातक** = पपीहा। **तृषित** = प्यासा। **गच-काँच** = फर्श के शीशे में। **सेन** = बाज पक्षी। **छति** = हानि। **बिसारि** = भूलकर।

3. **मृषा** = मिथ्या। **भासै** = प्रतीत होता है। **सुमृति** = स्मृति।

4. **भवनिसा** = संसाररूपी रात्रि। **न डसैहौं** = माया का बिछौना नहीं बिछाऊँगा अर्थात् अब असार माया के बन्धन में नहीं बँधूँगा। **चिन्तामनि** = चिन्तामणि; समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली एक विशिष्ट मणि। **उर-कर** = हृदयरूपी हाथ से। **खसैहौं** = गिराऊँगा। **कसौटी** = एक विशेष काले पत्थर का नाम है जिस पर सोना कसकर उसकी शुद्धता की परीक्षा की जाती है। **कसैहौं** = कसकर निर्विकार विशुद्ध बनाऊँगा। **पन** = प्राण। **बसैहौं** = बसने के लिए बाध्य कर दूँगा।

केशवदास

खण्ड परस = महादेवजी। **कोदंड** = धनुष। **धर** = धरा, पृथ्वी। **बरिबंड** = प्रबल। **अवली** = पंक्ति। **गजदंतमयी** = हाथियों के दाँतों से बने हुए मंच। **सुधाधरमण्डल** = चन्द्रमा के आस-पास बनने वाला घेरा। **जोन्हाई** = ज्योत्सना से। **देवन स्यों** = देवताओं सहित। **(अलंकार** = उक्त विषया वस्तूत्प्रेक्षा।) **मणि पन्नग** = बड़े-बड़े सर्प, शेष, वासुकि आदि। **पितृ** = पितृलोक निवासी। **ज्योतिवंत** = प्रतापी (चन्द्र, सूर्य आदि)। **अंगी** = शरीरी। **अनंगी** = अशरीरी। **विश्वरूप** = विश्वभर के रूपधारी लोग। **बीस बिसे** = बीस बिस्वा, पूर्णरूप से। **घनश्याम** = (1) रामचन्द्र (2) काले बादल। **बिहाने** = प्रातःकाल। **तरुपुण्य पुराने** = पूर्व पुष्यरूपी वृक्ष। (**अलंकार** = रूपक।) **ऋषि** = याज्ञवल्क्य ऋषि। **राजहिं लीने** = राजा जनक को साथ लिए हुए। **प्रवीने** = पुरोहित कार्य में कुशल। **दुवौ** = राजा जनक और सतानन्द। **शीरषबासु** = सिर सूँघकर। **कीरतिबेलि** = यशरूपी लता। **बयी** = बोया। **दान-कृपान-विधानन** = दान के विधान से अर्थात् दान देकर। **कृपान-विधानन** = युद्ध करके। **अंग छ** = वेद के छह अंग — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द। **सातक** = राज्य के सात अंग — राजा, मंत्री, मित्र, कोष, देश, दुर्ग, सेना। **आठक** = योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। **वेदत्रयी** = ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद। **शुभ योगमयी है** = सुन्दर तथा अच्छा मेल हुआ है। (**अलंकार** = रूपक।) **वर्ण** = रंग, जाति। **उत्तमवर्ण** = वर्ण से उत्तम अर्थात् ब्राह्मण। विश्वामित्र तप करके क्षत्रिय से ब्राह्मण हुए थे। **उदोत** = अभ्युदय। **बिजना** = व्यंजन, पंखा। **बात** = हवा। **तमतेज** = घना अंधकार। **भवभूषण** = 1. शंकर के शरीर की विभूति अर्थात् राख, 2. सांसारिक आभूषण। **मसी** = कालिख। **देव अदेवन को** = देवताओं और दानवों अर्थात सभी का। **भूव** = पृथ्वी। **भूपति** = राजा, पृथ्वी का पति। **भूतन** = पृथ्वी के शरीर से। **विदेहन** = जीवन-मुक्त। **भूषण को भवि भूषण** = भूषणों के लिए भी भव्य भूषण, अलंकारों को भी अलंकृत करने वाली। (**अलंकार** = विरोधाभास।) **कमलापति** = विष्णु। **विमलापति** = ब्रह्मा। **दानिन के शील** = दानियों में श्रेष्ठ। **परदान के प्रहारी दिन** = (विरोध परिहार पक्ष में) प्रतिदिन शत्रुओं से दण्ड के रूप में दान लेनेवाले। **पृथु सम** = पुराण प्रसिद्ध राजा पृथु के समान। **कंद** = बादल। विष्णु। **सुरपालक** = इन्द्र। **परदार** = लक्ष्मी। (**अलंकार** = विरोधाभास, उपमा, अनुप्रास।) **चंद्रचूड़** = महादेवजी। **पन्नग प्रचंड पति प्रभु** = प्रचण्ड पन्नगों (सर्पों) का स्वामी (राजा) वासुकि। **पनच** = प्रत्यंचा। **पीन** = पुष्ट, मोटी। **पर्वतारि** = इन्द्र। **पर्वतप्रभा** = दैत्य। **विनायक** = गणेश। **पिनाक** = धनुष। (**अलंकार** = व्यतिरेक, अनुप्रास।) **लीलयैव** = सहज ही में।

उत्तम गाथ = सर्व प्रशंसित, शिव का वह धनुष। **निर्गुण ते गुणवंत कियो** = प्रत्यंचारहित स्थिति (अन्य राजा प्रत्यंचा नहीं चढ़ा पाये थे) को गुणवंत किया (अर्थात राम ने प्रत्यंचा चढ़ा दी)। **नराच** = बाण। (**अलंकार** = रूपक, अनुत्रास।) **टंकोर** = टंकार। **चंड कोदंड** = कठोर धनुष। **मंडि रह्यो** = भर गया। **नव खण्ड** = इला, रमणक, हिरण्य, कुरु, हरि, वृष, किपुरुष, केतुमाल तथा भारत। **अचला** = पृथ्वी। **घालि** = तोड़कर। **ईश** = महादेव। **जगदीश** = विष्णु। **भृगु नंद** = परशुराम।

बाधि वर स्वर्ग को = स्वर्ग के वर (श्रेष्ठ) निवासियों के शान्त जीवन को बाधा देकर। **साधि अपवर्ग को** = मोक्ष साधकर (महर्षि दधीचि की हड्डियों से निर्मित शिव धनुष पर राम का हाथ पड़ते ही ऋषि दधीचि को मोक्ष प्राप्त हो गया।)

कविवर बिहारी

➥ भक्ति एवं शृंगार

1. **कुबत** = निन्दा (बुरी बात)। **त्रिभंगी लाल** = श्रीकृष्ण को इसलिए कहते हैं कि वंशीवादन करते समय वे पैरों से, कमर से और गर्दन से तीन स्थानों में तिरछे या टेढ़े हो जाते हैं। कवि यही रूप हृदय में बसाना चाहता है।

2. **अजौं** = आज तक। **श्रुति** = कान, वेद।

3. **धर्‌यो** = पकड़ा, अपने अधिकार में किया। **समरू** = समर, कामदेव। **निशान** = झण्डा। कामदेव के झण्डे पर मकर का चिह्न अंकित है, इसीलिए उसे मकरध्वज कहते हैं—जैसे विष्णु को गरुड़ध्वज, शिव को वृषभध्वज और अर्जुन को कपिध्वज कहते हैं।

4. **लुकाइ** = छिपाकर। **नटि जाय** = मना कर देती है।

7. **दिया बढ़ाएँ** = दीपक बुझा देने पर भी अमंगल दोष के कारण दिया बुझाना न कहकर दिया बढ़ाना ही कहा जाता है।

8. **जल चादर** = मध्य युग में जलकुण्डों के भीतर जल की सतह के नीचे जलते दीपों की कतार दिखायी जाती थी। जल चादर के दीपों का उन्हीं से आशय है।

9. **ब्यौरति** = सुलझाती है। **कच** = बाल।

11. **मीचु** = मृत्यु। **गैल** = पीछा।

13. **मैन** = कामदेव।

17. **भलैं** = भलीभाँति। यहाँ इसका अर्थ बड़ी विलक्षणता से है। **अहेरी** = शिकारी। **मार** = कामदेव। **काननचारी** = (1) कानों तक विचरनेवाले अर्थात् दीर्घ। (2) जंगल में विचरने वाले। **नागर नरनु** = नगर निवासी (सुघर) मनुष्य। **अलंकार** = श्लेष, रूपक।

18. **सलोने** = (1) सुन्दर (2) लवणयुक्त। **सनेह**—(1) प्रीति (2) चिकनाई अर्थात् तेल या घी। **सूरन**—यह मुँह में कनकनाहट उत्पन्न करता है। इसी को सूरन का मुँह में लगना कहते हैं। लवण तथा घृत में पकाने से इसकी कनकनाहट जाती रहती है। परन्तु यदि यह कुछ भी कच्चा रह जाता है तो मुँह में लगता है। इसको जमीकन्द भी कहते हैं। **मुँह लागि** = मुँह लग कर (1) धृष्टतापूर्वक झूठी बातें कह कर (2) मुँह से कनकनाहट उपजा कर। (**अलंकार**—श्लेष।)

19. **अनियारे** = अनीदार, नुकीले।

21. असंगति अलंकार का यह अन्यतम उदाहरण है, कारण कहीं, कार्य कहीं।

महाकवि भूषण

चतुरंग = रथ, हाथी, घोड़े एवं पैदल—इन चारों अंगों से युक्त सेना चतुरंग कही जाती थी। **जंग** = युद्ध। **गैबरन** = हाथियों के। **खैल-भैल** = खलभल। **तरनि** = सूर्य। **पारावार** = समुद्र। **बाने** = ध्वज। **नग** = पर्वत। **निसान** = निशान, ध्वज,

परन्तु यहाँ डंका के अर्थ में प्रयोग। **कुंजर** = हाथी। **कमठ** = कच्छप। **कोकबान** = एक प्रकार का बाण जिसे चलाते समय विशेष शब्द निकलता है। **इन्द्र को अनुज** = भगवान् विष्णु। **दुगध नदीस** = क्षीरसागर। **सुरसरिता** = देवनदी, गंगा। **रजनीस** = चन्द्रमा। **गिरीस** = शिव। **गिरिजा** = पार्वती। **मयूखैं** = किरणें। **गयंदन** = हाथी। **रुद्रहि** = शिव को। **करवाल** = तलवार। **कटक** = सेना। **किलकि** = प्रसन्न होकर। **वेसंगिनी** = वयःसंगिनी, आजीवन साथ देनेवाली। **दीह** = बड़े। **दारुन** = दारुण, भयंकर। **बलन** = सेना। **परछीने** = परक्षीण, परकटे पक्षी, बलक्षीण शत्रु अथवा हाथ-पैर कटे हुए शत्रु सैनिक। **बर** = बल। **पर** = शत्रु।

विविधा

➥ सेनापति

1. **वृष** = वृष राशि। **तचति** = तपती है। **सीरी** = शीतल। **नैंक** = थोड़ा। **पौनौं** = पवन (वायु) भी। **पकरि** = आश्रय लेकर। **घामै** = घाम, धूप।

2. **सिसिर** = शिशिर ऋतु। **सरूप** = स्वरूप। **सविताऊ** = सूर्य भी। **दुति** = कान्ति। **रजनी** = रात्रि। **झाईं** = छाया। **बासर** = दिन।

➥ देव

1. **केकी** = मोर। **कीर** = तोता। **करतारी दै** = हाथ की ताली बजाकर। **महीप** = राजा।
2. **आनि** = आकर। **निगोड़ी** = निकृष्ट, नीच।
3. **निरधार** = निरालम्ब, बेसहारा।

➥ घनानन्द

1. **नेकु** = घोड़ा भी। **सयानप** = चतुरता। **झझकै** = झिझकते हैं। **आँक** = अंक।
2. **वारौं** = न्योछावर करती हूँ। **भिजई** = भीगी। **आवनि** = आने का ढंग।
3. **परजन्य** = मेघ, बादल। **जथारथ** = यथार्थ।

●●●